दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट–VII (प्रश्नपत्र–2)

DTVF/18(JS)–HL-**HL7**

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंकः 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Pradeep Kumar Dwivedi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 7 21/08/2018

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

0	8	6	0	5	2	0

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) नैनाँ अंतरि आचरूँ, निस दिन निरषौं तोहि।
कब हरि दरसन देहुगे, सा दिन आवै मोंहि।।

'कबीरदास' की सखियों में ईश्वर मिलन की तड़प व विरह का भाव एक महत्वपूर्ण अंग है। 'ड॰ श्यामसुंदर दास' द्वारा संकलित 'कबीर ग्रंथावली' के 'विरह को अंग' में कबीर ० प्रभु-दर्शन के इंतजार की मार्मिक व्यंजना कर रहे हैं।

कबीर कहते हैं मैं एकटक आपकी राह निहार रहा हूँ और आपकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। हे ईश्वर मेरे ऐसे सुखद दिन कब आएँगे जब आप मुझे दर्शन दोगे

विशेष : रस- विप्रलंभ शृंगार
अलंकार- अनुप्रास
भाषा - पंचमेली खिचड़ी, सधुक्कड़ी (मोहिं, जैसे अवधी के प्रयोग हुए हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. प्रेमी की प्रतीक्षा के भाव की मार्मिक व्यंजना की गई है।

2. अन्यत्र कबीर लिखते हैं
" जीव्हया छाला पड़्या नाम पुकारि-पुकारि"
व जहाँ ऐसा ही भाव उत्पन्न होता है।

उ/

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) फागुन पवन झकोरा बहा। चौगुन सीउ जाइ नहिं सहा।।
तन जस पियर पात भा मोरा। तेहि पर बिरह देइ झकझोरा।।
तरिवर झरहि झरहि बन ढाखा। भइ ओनंत फूलि फरि साखा।
करहिं बनसपति हिये हुलासू। सो कहँ भा जग दून उदासू।।
फागु करहिं सब चाँचरि जोरी। मोहि तन लाइ दीन्ह जस होरी।।
जौ पै पीउ जरत अस पावा। जरत-मरत मोहि रोष न आवा।।
राति-दिवस बस यह जिउ मोरे। लगौं निहोर कंत अब तोरे।।
यह तन जारौं छार कै, कहौं कि 'पवन! उड़ाव'।
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहँ पाव।।

'नागमती के विरह वर्णन की सात्विकता ने जायसी' को हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवियों में शुमार करा दिया है। पद्मावत के नागमती वियोग खंड से उद्धृत पंक्तियाँ नागमती की वियोग दशा को षट्ऋतु वर्णन के माध्यम से प्रस्तुत कर रही हैं।

नागमती अपने वियोग का प्रसार प्रकृति में करती हुई कहती है कि फागुन की हवा का प्रकोप अब मुझसे सहा नहीं जा रहा और मेरा शरीर पत्ते के समान हो गया है जिससे हवा उसे बार-बार झकझोर देती है।

दुनिया भर में फाग गाया जा रहा है परन्तु मेरा शरीर होली की भाँति जल रहा है। परन्तु यदि ऐसे जलते हुए भी मुझे प्रिय के दर्शन हो जाएँ तो मुझे क्रोध नहीं आएगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुझे तो रात दिन बस अब प्रिय तुमसे ही मिलने की रट लगी है।

नागमती की आत्मोत्सर्ग की इच्छा व्यक्त करते हुए कहती है कि मेरा यह शरीर जलाकर इसकी राख को पति के चरणों में बिछा दे ताकि उनका मार्ग कोमल हो जाए।

सौन्दर्य: रस- विप्रलंभ शृंगार
अलंकार- उपमा, रूपक
भाषा - ठेठ अवधी
छंद - दोहा एवं चौपाई (कड़वकबद्ध शैली)

विशेष: 1. विरह का साधारणीकरण अद्भुत है क्योंकि नागमती ने इसे 'रानी' बनकर नहीं 'नारी' बनकर भोगा है।

2. सूर की गोपियाँ भी 'मधुबन तुम कत रहत हरे' कहते हुए विरह विस्तार करती हैं।

3. आचार्य शुक्ल ने इस विरह वर्णन को 'हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु' कहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अपनो स्वारथ को सब कोऊ।
चुप करि रहौ, मधुप रस-लंपट, तुम देखे अरु वोऊ।।
औरो कछू संदेस कहन को कहि पठयो किन सोऊ।
लीन्हें फिरत जोग जुवतिन को बड़े सयाने दोऊ।।
तब कत मोहन रास खिलाई जो पै ज्ञान हुतोऊ?
अब हमरे जिय बैठो यह पद होनी 'होउ सो होऊ'।।
मिटि गयो मान परेखो ऊधो हिरदय हतो सो जोऊ।
सूरदास प्रभु गोकुलनायक चित-चिंता अब खोऊ।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्याख्येय पद्यखण्ड 'सूरदास' कृत 'भ्रमरगीत सार' से उद्धृत है। गोपियाँ यहाँ वक्रोक्ति प्रधान शैली में उद्धव के योग मार्ग की निंदा कर रही है।

गोपियाँ 'भ्रमर' के माध्यम से उद्धव से उपालंभ करते हुए कहती हैं कि सबको अपना स्वार्थ प्रिय होता है। कृष्ण ने तुम्हें कुछ और कहने के लिए भेजा और तुम हमें क्या कुछ और कह रहे हो। तुम्हारी बड़ी चतुराई है कि युवतियों को योग सिखा रहे हो जबकि यह उम्र तो 'राग' की है।

हे उद्धव तुम्हारी ऐसी बातें सुनकर तुम्हारे प्रति जो रहा-सहा सम्मान था वह भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खतम हो गया। हमारे मन में तो सिर्फ गोकुलनायक कृष्ण विराजमान है।

सौन्दर्य : अलंकार - रूपक
भाषा - ब्रज
रस - विप्रलंभ शृंगार

विशेष : 1. आचार्य शुक्ल ने ऐसेही कथनों के कारण सूर की भाव प्रेरित वक्रोक्तियों की प्रशंसा की है।

2. भक्ति मार्ग की ज्ञान-मार्ग पर श्रेष्ठता का भाव परिलक्षित होता है।

3. साधारण मनोविज्ञान का प्रयोग कि यौवन में राग-रँग आदि मन को भाता है शुल्क बातें नहीं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(घ) नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।
तज्यौ मनौ तारन-बिरदु बारक बारनु तारि।।

ऐसे तो 'बिहारी' की 'सतसई' की प्रसिद्धि भोगमूलक सँयोग श्रृंगार प्रधानता के लिए है परन्तु उसका विषय-वैविध्य भी कमाल का है। यहाँ भक्त द्वारा बार-बार बुलाने पर भी भगवान के न आने पर भक्त उपालंभ कर रहा है।

भक्त कहता है कि हे ईश्वर तुम्हारी आनाकनी भी विचित्र है कि मेरी प्रार्थना का स्वर फीका पड़ गया है।

ऐसा लगता है मानो गजशिशु को तारने के बाद आपने अपना कार्य सम्पन्न मान लिया है और संसार को त्याग दिया है।

सौन्दर्य: भाषा - ब्रज
रस - भक्ति
अलंकार - उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त, अनुप्रास

विशेष - 1. बिहारी का काव्य शब्द-सौष्ठव का अन्यतम उदाहरण है बिरदु, बारक ऐसे ही सजग प्रयोग हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. बिहारी को 'अनुभावों' का कवि कहा जाता है परन्तु यहाँ भक्त की भावना का चित्रण किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) जिन श्रेष्ठ सौधों में सुगायक श्रुति-सुधा थे घोलते,
निशि-मध्य, टीलों पर उन्हीं के आज उल्लू बोलते!
"सोते रहो हे हिन्दुओ! हम मौज करते हैं यहाँ,"
प्राचीन चिह्न विनष्ट यों किस जाति के होंगे कहाँ?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नवजागरण की चेतना में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के स्वर प्रमुखता से मिलते हैं जहाँ भूतकाल की महानता के आलोक में वर्तमान की स्थिति पर चिंता व्यक्त की जाती है।

मैथिलीशरण गुप्त 'भारत-भारती' के में ऐसे ही भाव की व्यंजना कर रहे हैं।

गुप्त जी कहते हैं कि जिन महलों में (भारत में) पहले सुन्दर गायन हुआ करता था वे अब ऐसे वीरान हो गए हैं कि रात्रि में उल्लुओं की आवाजें आती है।

वे व्यंग्य करते हैं कि जब सम्पूर्ण जाति निश्चिन्त होकर सोती रहेगी जो विनाश होगा ही और उल्लू जैसे अपशकुन ही मौज करेंगे।

6 सौन्दर्य: 1. भाषा - तत्समबहुला किन्तु बोधगम्य खड़ी बोली हिन्दी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. अभिधा शब्द-शक्ति का प्रयोग सामान्यतः हुआ है पर 'उल्लू बोलने' जैसे लक्षणा के प्रयोग भी सुन्दर बन पड़े हैं।

3. लय का लगातार निर्वाह गुप्त जी के काव्य की विभेदक विशेषता है। वे स्वयं भी अपनी कविता को 'तुकबंदी' कहते हैं।

4. 'हिंदुओं' जैसे प्रयोग के कारण ही भारत-भारती पर 'हिंदूवादी' होने के आरोप लगे हैं जिसे बाद में गुप्त जी ने स्पष्ट करते हुए 'भारतीय' के अर्थ में लिया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. (क) दिनकर का मानवतावादी दर्शन कुरुक्षेत्र में किस रूप में अभिव्यक्त हुआ है? प्रकाश डालिये। 20

रामधारी सिंह दिनकर को ~~सहज~~ सहज मानवीय भावनाओं व मानव-धर्म का कवि कहा जाता है जहाँ एक तरफ वे उर्वशी में सहज काम को गौरवान्वित करते हैं वहीं कुरूक्षेत्र में 'समाजवादी' मानवतावाद की अभिव्यक्ति करते हैं।

'मानवतावाद' मनुष्य को केन्द्र में रख इहलौकिकता, समाज-कल्याण, समानता आदि मूल्यों का प्रक्षेपण करता है।

दिनकर भीष्म के उत्तरों के माध्यम से एक तरफ परलौकिकता का खण्डन करते हैं तो दूसरी तरफ इस जीवन की सार्थकता की स्थापना

" ऊपर सब कुछ शून्य - शून्य है, कुछ भी नहीं गगन में।
जो कुछ भी है धर्मराज, इस मिट्टी में, जीवन में ॥"

आगे बढ़कर वे सहज भावनाओं को ब्रह्मचर्य व त्याग से उ प्रतिष्ठित बताते हैं

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"न था मुझे विश्वास, कि मैं से स्नेह श्रेष्ठ सुंदर है।
कोमलता की लौ, व्रत के आलोकों से बढ़कर है॥"

वे विज्ञान - तकनीकी के अधिकारों को मानवता के विकास के लिए आवश्यक बताते हुए इसके उचित प्रयोग का आह्वान करते हैं तथा अनुचित प्रयोग मुख्यतः युद्ध आदि का निषेध करते हैं।

"इस सावधान मनुष्य, यदि विज्ञान है तलवार
तो इसे दे फेंक तजकर, मोह स्मृति के पार॥

वे व्यक्ति के ऊपर समाज को प्रमुखता देते हुए सर्वजन हिताय को महत्व देते हैं और इसके लिए शोषण आधारित शांति का विरोध करते हैं -

"हिलो डुलो मत हृदय रक्त मुझको अपना पीने दो
अचल रहे साम्राज्य शान्ति का, जियो और जीने दो"

और वे उचित शांति के प्रतिमान तय करते हैं कि जब संसाधनों का वितरण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

न्यायपूर्ण रूप से व्यक्ति की आवश्यकतानुसार होगा तभी वास्तविक शांति की स्थापना ~~होगा~~ होगी।

"जब तक मनुज-मनुज का यह, सुख भाग नहीं
सम होगा।
शमित न होगा कोलाहल, संघर्ष नहीं कम
होगा॥"

अंत में वे मानवता की विजय हेतु आशावादी दृष्टिकोण व्यक्त करते हैं और कहते हैं कि एक दिन अवश्य मानवता इस धरा पर आएगी
"आशा के प्रदीप को जलाए रखो धर्मराज
एक दिन मुक्त होगी भूमि, रण भीति से"

इस प्रकार दिनकर नेहरू व मार्क्स के मानवतावाद से वैचारिक ऊर्जा ग्रहण करते हुए कुरुक्षेत्र में मानव-कल्याण को एकमात्र उद्देश्य के रूप में स्थापित करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नागमती के विरह-वर्णन को मध्यकालीन नारी की दासता का चित्रण कहना कहाँ तक उचित है? अपना मत प्रस्तुत कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

नागमती के विरह-वर्णन को लेकर यहाँ सँस्कृतिवादी आलोचक प्रशंसारत होकर इसे "हिन्दी साहित्य की अमूल्य वस्तु" तथा "हिन्दू गृहिणी की पवित्र विरह-वाणी" बताते हैं वहीं दिनकर व मुक्तिबोध सम आलोचक इसमें नारी की दुर्दशा को लेकर इसे मध्यकालीन नारी की पराधीनता से जोड़ते हैं।

यह मध्यकालीन सामंतवाद का ही प्रभाव है कि यहाँ पुरुष एक पत्नी के होते हुए भी दूसरी स्त्री के आकर्षण में रत है वहीं नागमती जैसी स्त्रियाँ अपनी कमजोर स्थिति के कारण पति की प्रतीक्षा करने को विवश हैं। नागमती की यह दुर्दशा तब है जब वह रानी है, आम नारी की दशा का आलम तो शायद इससे भी गया गुजरा रहा होगा।

दासता की व्याप्ति इस हद तक है कि नागमती दूसरी स्त्री के साथ अपना प्रेम बाँटने

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को तैयार है

" नागमती सौं कहेउ विहंगम, कंत लोभाय कर
रही संगम
मोहि भोग सों काज न भारी, सौंह दिस्टि कै
चाहनहारी"

वहीं दूसरी तरफ यह स्त्री की गुलामी का ही प्रतीक है कि जो पति उसकी कइ नहीं करता उसके लिए भी वह आत्मोत्सर्ग तक करने को तैयार है-

" यह तन जारौं छार के, कहौं कि पवन
उड़ाव
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरैं जहँ पाँव"

एक दृष्टि से यह मत ठीक है क्योंकि मध्यकाल में नारी को वास्तव में दोयम दर्जे का समझा जाता था और पुरुष पर आश्रित अबला, माता, पुत्री और पत्नी के दायरे में बाँध दिया जाता था।

परन्तु यह सिर्फ एक पक्ष है। जायसी ने भावनात्मक प्रेम, त्याग व स्वार्थरहित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रतिस्पर्धा का जो संप्रेषण किया है, वह भी अपने आप में उत्कृष्ट है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) बिहारी की समाहार-शक्ति का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

बिहारी का काव्य अति-शृंगारिकता जैसे भावों के लिए जहाँ आलोचित होता आया है वहीं शैल्पिक सौन्दर्य के लिए प्रशंसित।

आचार्य शुक्ल व ग्रियर्सन प्रभृति आलोचकों ने उनके शब्द-सौष्ठव, तराश व वाक्य विन्यास की प्रशंसा तो की ही है, उनकी गागर में सागर भरने वाली सामासिकता व समाहार शक्ति को अद्वितीय बताया है।

बिहारी की समाहार क्षमता वहाँ देखने को मिलती है जहाँ वे ~~मु~~ मुक्तक में भी सबसे छोटे छंद दोहे में सात-सात क्रियाओं को गूँथते हुए चमत्कृत कर देते हैं—

" कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत लजियात।
भरे भौन में करत है, नैनन ही सौं बात।।"

उनकी समाहार क्षमता की उत्कृष्टता का ही ~~उदाह~~ कमाल है कि वे एक-एक शब्द को ध्वनियों में ऐसे ढालते हैं कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संगीत सुनने जैसा आनन्द आता है चाहे "रणित भृंग घंटावली" की चर्चा हो या "झमकि-झमकि टहलें करें" की।

भाषा के स्तर पर समाहार क्षमता दिखाते हुए वे 'माहिं', 'तोहि' जैसे पूर्वी प्रयोग भी करते हैं और 'दीन्ह' जैसे बुंदेली प्रयोग भी।

वस्तुतः बिहारी का काव्य वह चमत्कार है जहाँ एक-एक शब्द चुन-चुनकर जड़ा गया है, तराशा गया है। इसीलिए ग्रियर्सन ~~प्रकृति~~ को कहना पड़ा कि "पूरे यूरोप में एक भी कवि बिहारी जैसा नहीं है"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) करते हुए उसके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है। जब पूज्यभाव की वृद्धि के साथ श्रद्धाभाजन के सामीप्य-लाभ की प्रवृत्ति हो, उसकी सत्ता के कई रूपों के साक्षात्कार की वासना हो, तब हृदय में भक्ति का प्रादुर्भाव समझना चाहिये। जब श्रद्धेय के दर्शन, श्रवण, कीर्तन, ध्यान आदि से आनन्द का अनुभव होने लगे–जब उससे सम्बन्ध रखने वाले श्रद्धा के विषयों के अतिरिक्त बातों की ओर भी मन आकर्षित होने लगे, तब भक्ति रस का संचार समझना चाहिये।

व्याख्येय गद्यांश 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' के 'चिंतामणि' में संकलित मनोविकारपरक निबंध 'श्रद्धा-भक्ति' से उद्धृत है।

शुक्ल जी यहाँ श्रद्धा और भक्ति का अंतर स्पष्ट कर रहे हैं।

शुक्ल जी बताते हैं कि यूँ प्रेम एकांतिक और श्रद्धा सामाजिक भाव है परन्तु दोनों भावों के मिलन को भक्ति कहा जाता है।

जब श्रद्धा भाव के साथ-साथ पूज्य की निकटता व उसकी जीवन क्रियाओं में सामीप्य की लालसा आ जाए तो भक्ति का भाव मानना चाहिए।

जब श्रद्धेय के कीर्तन आदि तथा जिन विशिष्ट गुणों के कारण श्रद्धा हुई ~~इस~~ उससे इतर अन्य

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

गुणों के प्रति आकर्षण हो तो भक्ति का उदय समझा जाना चाहिए।

विशेष: 1. पहले 'सूत्र' और फिर उसका विस्तार 'निगमनात्मक' शैली की पहचान है।

2. 'विचारों की गूढ़-गुंफित परंपरा' लगातार व्याप्त है।

3. तत्सम-प्रधान किन्तु बोधगम्य खड़ीबोली का प्रयोग

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) तुम्हें पता था मैं भीग जाऊँगी। और मैं जानती थी तुम चिन्तित होगी। परन्तु माँ...
...मुझे भीगने का तनिक खेद नहीं। भीगती नहीं तो आज मैं वंचित रह जाती।
चारों ओर धुआँरे मेघ घिर आये थे। मैं जानती थी वर्षा होगी। फिर भी मैं घाटी की पगडंडी पर नीचे-नीचे उतरती गयी।
एक बार मेरा अंशुक भी हवा ने उड़ा दिया। फिर बूँदें पड़ने लगीं। वस्त्र बदल लूँ, फिर आकर तुम्हें बताती हूँ। वह बहुत अद्‌भुत अनुभव था माँ, बहुत अद्‌भुत।

'मोहन राकेश' कृत नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' इतिहास के आवरण में वर्तमान की व्यंजना है। मल्लिका-अंबिका संवाद के माध्यम से मोहन राकेश यहाँ भावनात्मक प्रेम की व्यंजना कर रहे हैं।

मल्लिका बारिश में कालिदास के साथ भीगकर लौटी है और उसे भीगने के समय भावनाओं के चरम का एहसास हुआ है। उसने अपना सारा जीवन कालिदास को समर्पित कर दिया है। इसी भाव में बहकर वह कहती है कि अच्छा हुआ आज भीग गई नहीं तो इतनी सुखद भावनाओं के एहसास से वंचित रह जाती। इसलिए मैं जानबूझ-कर भीगना चाहती थी।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :

1. मल्लिका के भावनात्मक व्यक्तित्व का उद्घाटन हुआ है।

2. इन्हीं पंक्तियों के आगे अंबिका के उत्तर के माध्यम से राकेश यौवन की भावनात्मकता और 'अनुभव की आँच' का अन्तर भी व्यक्त करते हैं।

3. ~~भविष्य~~ पूरा गद्यखण्ड एकतरह से भावनाओं में डूबने का प्रतीक ही है इस माध्यम से व्यंजना शब्द-शक्ति की सुंदरता हृष्टव्य है।

4. ऐतिहासिक आवरण के बाद भी तद्भव शब्दों का प्रचुर प्रयोग हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) और मनुष्य पशु नहीं है, क्योंकि उसे बातें बनाना आता है– अपनी मूर्खताओं को छिपाना, पापों पर बुद्धिमानी का आवरण चढ़ाना आता है! और वाग्जाल की फाँस उसके पास है। अपनी घोर आवश्यकताओं में कृत्रिमता बढ़ाकर, सभ्य और पशु से कुछ ऊँचा द्विपद मनुष्य, पशु बनने से बच जाता है।

'जयशंकर प्रसाद कृत स्कन्दगुप्त' यूँ तो राष्ट्रीय- सांस्कृतिक आदर्शवाद व प्रत्यभिज्ञा दर्शन के संप्रेषण के लिए प्रसिद्ध है परन्तु मुद्गल- मातृगुप्त संवाद के माध्यम से काव्य कर्म की प्रतिष्ठा व मनुष्य की प्रच्छन्नताओं का अनावरण भी किया गया है जो यहाँ प्रस्तुत है।

मुद्गल व्यंग्य करते हुए कहता है कि मनुष्य पशु सिर्फ इसलिए नहीं है क्योंकि उसने अपने मूल-रूप को वाग्जाल के माध्यम से, सभ्यता रूपी झूठ के माध्यम से छिपा रखा है। इसलिए मनुष्य के सब दुष्कर्म छिप जाते हैं। अन्यथा मनुष्य भी उतना ही बनैला पशु है।

विशेष - 1. आचार्य शुक्ल ने 'कविता क्या है' में ऐसी ही प्रच्छन्नताओं के अनावरण

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान मे कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का कार्य कवियों को सौंपा है।

2. मनुष्य की अति-भौतिकता व कुटिलता पर व्यंग्य किया गया है।

3. तत्समप्रधान होने पर भी भाषा बोधगम्य एवं सहज है। 'फाँस' जैसे तद्भव प्रयोग सुंदर बन पड़े हैं।

4. उपरोक्त कथन मुद्गल की ~~स्वाभाविक~~ सामाजिक बुद्धि को दर्शाते हैं जबकि वह विदूषक के किरदार में है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) इस दुनिया में सबसे मेल-जोल रखकर चलना पड़ता है। नदी किनारे की घास पानी के साथ थोड़ा झुक लेती है और फिर उठ खड़ी होती है, लेकिन बड़े-बड़े पेड़ धार के सामने अड़ते हैं और टूट जाते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) कविता केवल वस्तुओं के रूप-रंग में सौंदर्य की छटा नहीं दिखाती, प्रत्युत कर्म और मनोवृत्ति के भी अत्यंत मार्मिक दृश्य सामने रखती है। वह जिस प्रकार विकसित कमल, रमणी के मुखमंडल आदि के सौंदर्य मन में लाती है, उसी प्रकार उदाहरण, वीरता, त्याग, दया, प्रेमोत्कर्ष इत्यादि कर्मों और मनोवृत्तियों का सौंदर्य भी मन में जमाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यखण्ड आचार्य शुक्ल कृत निबंध 'कविता क्या है' से उद्धृत है।

शुक्ल जी यहाँ कविता की उपयोगिता की चर्चा कर रहे हैं।

वे कहते हैं कि कविता केवल सौन्दर्य की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है बल्कि अत्यन्त मार्मिक भावनाओं के उद्घाटन का माध्यम भी है। वह जिस प्रकार कमल, नवयौवना आदि के सौन्दर्य को चित्रित कर सकती है इसी प्रकार उच्च भावनाओं यथा वीरता, प्रेम इत्यादि कर्मों के प्रति भी मनुष्यको आकृष्ट करती है।

विशेष: 1. काव्य-कर्म की मानव जीवन में उपयोगिता की व्यंजना उन आलोचकों को प्रत्युत्तर है जो रचना-कर्म को

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अनुपयोगी व गैर-उत्पादक मानते हैं।

2. कविता के समस्त पक्षों पर गहन विचार किया गया है।

3. तत्सम-प्रधान, चिंतन-प्रधान भाषा व व्यास शैली का अन्यतम प्रयोग

4. उपमा अलंकार के प्रयोग से गद्य में भी काव्यात्मकता आ गई है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. (क) शहरी जीवन के चित्रण में अधिक सफलता न मिलने के बावजूद प्रेमचंद द्वारा गोदान में शहरी कथा के समावेश के क्या कारण हो सकते हैं? युक्तियुक्त उत्तर लिखिये। 20

प्रेमचन्द के रचनाकर्म के उत्कर्ष के समय लिखे जाने के बावजूद आलोचकों ने शहरी कथा का ठीक ढंग से निर्वाह न होने का आरोप 'गोदान' पर लगाया है।

कथा में एक तो शहरी प्रसंग बहुत कम हैं और जो हैं भी वे इतने कमजोर हैं कि शहरी जीवन पाठक की संवेदना में स्थान नहीं बना पाता।

दूसरी तरफ शहरी और ग्रामीण जीवन के संपर्क-सूत्र भी चार ही हैं और उनकी आवृत्ति बहुत कम है। जहाँ मेहता-मालती दो बार गाँव आए हैं वह भी अमहत्वपूर्ण कार्यों से, वहीं राय साहब का प्रसंग भी थोपा हुआ ही लगता है। गोबर के माध्यम से 2 कथाओं का समावेश कुछ हद तक हो पाया है।

परन्तु यह कहना कि यह प्रेमचन्द के रचनाकर्म की कमजोरी है, पूर्णतया सत्य नहीं है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space

आलोचकों ने स्पष्ट किया है कि प्रेमचन्द ने शहरी कथा को जानबूझकर कमजोर रखा है व संपर्क सूत्र कम दिखाए हैं तथा शहरी कथा को रखने के कुछ निश्चित कारण गिनाए हैं।

एक तो रचनाकाल के समय शहर और गाँवों में उतना ही संपर्क था जितना प्रेमचंद ने दिखाया है और या मेहता-मालती, रायसाहब जैसे लोग सैलानी भाव से ही गाँव आते थे।

दूसरा प्रेमचन्द शोषण को सम्पूर्णता में दिखाना चाहते ही थे। जैसे 'होरी' जैसा किसान गाँव में शोषण पीड़ित है तो वहीं इसका शोषक वर्ग यथा 'रायसाहब' शहर में दलालों व पूँजीपतियों से पीड़ित है और शोषण की शृंखला की ही कड़ी है।

जो स्थिति गाँव में 'मरजाद', 'बिरादरी' के चक्र में फँसे किसान की है, वही स्थिति 'कोलाहल' में फँसे मजदूर की है जो 'मानसिक अवसाद' का उपाय

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ताड़ी या शराब के माध्यम से टूटता है।

प्रेमचन्द दिखाते हैं कि व्यक्ति की परिस्थितियाँ व्यक्तित्व का निर्धारण करती हैं और 'गोबर का 'सूदखोर' हो जाना शहरी कथा के माध्यम से ही संभव हो पाया है।

चाहे उभरते नारी-~~आन्दो~~ आंदोलन की गूँज हो या मजदूरों की हड़ताल की, 'गोदान' में इनका चित्रण शहरी कथा के ~~माध्य~~ ने ही मुनासिब किया।

चूँकि प्रेमचन्द महाकाव्यात्मक उपन्यास लिख रहे थे इसलिए शहरी कथा आवश्यक थी और उन्होंने इस कथा से प्रयोजन-सिद्धि में सफलता प्राप्त की है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नई कहानी की विशेषताओं के आलोक में कमलेश्वर की कहानी 'खोई हुई दिशाएँ' का विवेचन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'नई कहानी' घोषित रूप से 'भोगे हुए यथार्थ' की कहानी है जो आजादी के बाद के मोहभंग, गाँव से शहर गए मध्यम-वर्गीय व्यक्ति के आत्म-निर्वासन, अकेलापन, शहरों में व्याप्त संबंधों की यांत्रिकता तथा उपयोगितावाद को विषय-वस्तु बनाकर चलती है।

'कमलेश्वर' नई कहानी के प्रणेता रचनाकारों में से है इसलिए उनकी सर्वश्रेष्ठ कहानी 'खोई हुई दिशाएँ' नई कहानी की प्रतिनिधि रचना है।

इस कहानी में 'चंदर' उसी अकेलेपन व 'पहचान के संकट' से व्यथित है जो उस युग का सत्य है। वह 'भीड़ में अकेला' है, तथा आत्मनिर्वासन का शिकार होकर उन रास्तों पर टहल रहा है जो 'कहीं नहीं जाते'।

वह उसी मानसिक थकान से घिरा है जो कुछ ज्यादा काम न करने के बावजूद हो

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जाती है।

संबंधों की यांत्रिकता इस कदर है कि 'आनंद' उसे सिर्फ 'कुछ पैसे होंगे' का माध्यम मानता है तो 'इन्द्रा' भी भूल गई है कि 'वह चाय में एक चम्मच से ज्यादा चीनी नहीं लेता' और पूछ लेती है कि 'चीनी कितनी डालूँ'।

उसे जहाँ भी संबंधों में आत्मीयता का एहसास होता है वहाँ निराशा ही हाथ लगती है।

शैल्पिक स्तर पर भी कहानी में 'कथानक का टूटना', तथा 'इफ यू डोन्ट माइंड' तथा 'किसी होरने लए होने पाँच आने' जैसे कथ्यानुरूप अंग्रेजी व पंजाबी प्रयोग, चेतना प्रवाह शैली आदि सभी नई कहानी की ही विशेषताएँ है जो 'खोई हुई दिशाएँ' को नई कहानी की प्रतिनिधि कहानी बनाती हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कहानी का शीर्षक भी ~~अ~~ 'गुमशुदा' तथा आत्म-निर्वासन का ही संप्रेषण है।

वस्तुतः कमलेश्वर ने नई कहानी की समस्त विशेषताओं को यहाँ बखूबी निभाया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'यही सच है' कहानी की शिल्प-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मन्नू भंडारी का रचनाकर्म जितना वैविध्य व कथ्य की मजबूती के लिए जाना जाता है उतना ही शैल्पिक उत्कर्ष के लिए।

'यही सच है' नई कहानी का प्रतिनिधित्व करती है और शिल्प में यही परिलक्षित होता है।

कहानी में कथानक आदि, मध्य, अंत में बँधा न होकर टूट गया है हालांकि यह 'टूटना' व 'दूध का दाम' की हद तक नहीं टूटा।

~~घटनाएँ~~ घटनाओं की न्यूनता तथा मनोभावों, स्थितियों का सघन विवेचन कहानी में लगातार दिखता है।

भाषा के स्तर पर मन्नू भंडारी ~~सँ~~ प्रेषण को प्रधानता देते हुए अंग्रेजी शब्दों का आवश्यकतानुरूप प्रयोग करती हैं।

शैल्पिक दृष्टि से उत्कृष्टतम प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

'डायरी शैली' की उपस्थिति है जिससे नायिका के मन की वे स्थितियाँ उभरकर सामने आई हैं जो अन्यथा संभव न हो पाती। चाहे वह निशीथ और संजय को लेकर अंतर्द्वंद्व हो या फिर निशीथ के प्रति प्रेम की रोमानियत।

चेतना-प्रवाह शैली ~~तत्व~~ का प्रयोग भी सफलता से किया गया है जिससे नायिका के मन में चल रही उथल-पुथल का सटीक वर्णन संभव हो पाया है। 'पूर्वदीप्ति' जैसे ~~प्रयोग~~ प्रयोगों ने चेतना प्रवाह को मजबूत किया है।

वस्तुतः कहानी में 'नई कहानी' परंपरा की समस्त विशेषताओं का सुंदर मिश्रण है जो 'सच' को संपूर्णता में संप्रेषित करने में सक्षम हुआ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'नई कहानी में 'भोगे हुए क्षण' और 'अनुभव की प्रामणिकता' को जिस रूप में पेश किया गया था, उससे अमरकांत का दृष्टिकोण ही नहीं, उनकी कहानियों का मिजाज़ भी भिन्न है।' इस कथन के आलोक में अमरकांत की कहानी 'जिंदगी और जोंक' के मर्म का उद्घाटन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नई कहानी घोषित रूप से 'भोगे हुए यथार्थ' व 'अनुभव की प्रामाणिकता' की कहानी है। परन्तु यह 'यथार्थ' व 'अनुभव' सामाजिक न होकर 'व्यक्ति' के दायरे में सीमित है।

यह यथार्थ प्रत्येक व्यक्ति का अपना यथार्थ है चाहे वह 'संबंधों की टूटन' हो, शहरी जीवन का 'आत्म निर्वासन' हो या फिर 'उपयोगितावादी संबंध दृष्टि' हो। यही भाव 'टूटना' 'यही सच है' तथा 'खोई हुई दिशाएँ' जैसी कहानियों में व्यक्त हुआ है।

परन्तु अमरकान्त इस लीक से अलग हटते हैं। वे 'यथार्थ' व 'अनुभव' को व्यक्त तो करना चाहते हैं पर उस 'गरीब की दुर्दशा' के सामाजिक यथार्थ को जिसमें सब वस्तु समस्त' हैं, और पशु-बर्बर

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

व्यवहार का पात्र बनाते हैं।

'जिंदगी और जोंक' में इसी कटु सामाजिक सत्य को 'रजुआ' के माध्यम से व्यक्त किया गया है। 'रजुआ' को गाँव का प्रत्येक परिवार 'सस्ता नौकर' समझकर उसका उपयोग करता है, थोड़ा बहुत खाना देकर काम कराता है परंतु जब वह बीमार हो जाता है तो उसे अनुपयोगी पशु की भाँति त्याग दिया जाता है।

अमरकान्त इससे भी आगे बढ़कर उस 'जीवनेच्छा' की भी अभिव्यक्ति करते हैं जो दुर्दशा के बावजूद जोंक की तरह रजुआ से लिपटी हुई है। वह अपने ऊपर से अपशकुन हटाने के लिए गाँव उसकी मृत्यु की झूठी खबर पहुँचाता है और जीवन जीना चाहता है भले ही वह जीवन उसे कुछ न दे रहा हो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अमरकान्त इस तरह फ्रॉयड के 'कामेच्छा' से आगे बढ़कर जीवनेच्छा को स्थापित करते हैं।

वहीं ~~व्यक्ति~~ समाज के -यूनतम व्यक्ति के 'सच' का संप्रेषण कर 'नई कहानी' को 'सामाजिकता' की ओर ले जाते हैं और मध्य-वर्ग की भावना-शून्यता को उद्घृत करते हैं।

कहना न होगा अमरकान्त ने नई कहानी में एक सार्थक परिचलन कर इसे एकायामी होने से बचाया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'भोलाराम का जीव' कहानी की संवेदना पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'भोलाराम का जीव' आजादी के बाद के भारत की विद्रूपताओं का व्यंग्यात्मक चित्रण है।

इसके मुख्यांश में भ्रष्टाचार की उस व्याप्ति का चित्रण किया गया है जो गरीब से गरीब व्यक्ति को भी नहीं छोड़ती तथा देश के विकास का मार्ग अवरुद्ध कर अधिकारी वर्ग की जेबें गरम करने का कार्य करती है।

'भोलाराम' जैसे आम व्यक्तियों को 'पेंशन' जैसे अधिकार के लिए भी इतने चक्कर लगाने पड़ते हैं और मृत्यु होने तक भी भ्रष्टतंत्र का दिल नहीं पसीजता वहीं 'वजन रखने' वालों के काम तुरन्त कर दिए जाते हैं।

चित्रगुप्त - नारद के माध्यम से परसाई जी निर्माण कार्यों में चल

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रही धाँधली व घोटालों की चर्चा ~~स्वर्ग में~~ नरक में चल रहे निर्माण कार्य के माध्यम से करते हैं।

कहानी उस परिवार की दुर्दशा को भी व्यक्त करती है जिसकी आय का एकमात्र आधार मामूली पेंशन है और बताती है कि आजादी के जो सपने बेचे गए उनमें एक भी सार्थक होकर आम-भारतीय के जीवन में लेश-मात्र भी परिवर्तन नहीं कर पाया।

आम-आदमी लुटता ही है चाहे राजतंत्र विदेशी हो या स्वदेशी।

वस्तुतः कहानी 'भ्रष्टाचार' की समस्या का 'सशक्त' एवं ~~संपूर्ण~~ संपूर्ण संप्रेषण है जो आज का सच ~~बयाँ~~ भी उसी सघनता से बयाँ करती है जितना लेखन के समय का।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कफन' कहानी के कथ्य पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कफन' उस परिवर्तन का चरमस्तर है जो 'शशी-सारंघ्रा' व 'बड़े घर की बेटी' से लेकर 'पूस की रात' के माध्यम से हुआ।

यह कहानी प्रेमचन्द के आदर्शवादी यथार्थ ~~से~~ दीनग्न यथार्थ में परिणति की कहानी है।

कफन के 'घीसू' और 'माधव' के शोषणतंत्र से पीड़ित उस निम्न~~वर्गीय~~ ~~वर्ग~~-वर्ग को चित्रित करते हैं जो जानता है कि "बहुत मेहनत करने वालों की स्थिति भी उनसे बहुत अच्छी नहीं है, और वे लोग सुखी हैं जो उनका शोषण कर अपना घर भरते हैं।"

'कफन' में प्रेमचन्द उन सामाजिक मान्यताओं के विद्रूप स्वरूप को भी ~~उद्घ~~ उद्घाटत करते हैं जिसमें जीते जी तो व्यक्ति को 'चीथड़ा' तक नसीब नहीं होता और मरने पर 'नया कफन' दिया जाता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

'कफन' में स्पष्ट होता है कि व्यक्ति की स्थिति ही व्यक्ति की संवेदना तय करती है। जो घीसू और माधव आलू छोड़कर मृत्यु की स्थिति में पहुँची बहू व पत्नी के प्रति भी संवेदना नहीं दिखा पा रहे थे वही भर-पेट भोजन प्राप्त कर भिखारी को पूड़ियाँ देने का आनन्द और 'गौरव' महसूस कर रहे हैं।

कफन आम समाज की जिन्दगी की भाँति ही किसी सुखद अन्त की घोषणा का त्याग ~~क~~ करते हुए शोषण, परंपरा, की सघनता को व्यक्त करती है।

इसी को लेकर आलोचकों को कहना पड़ा कि " प्रेमचंद की प्रकाश अभ्यस्त आँखे ~~म~~ यहाँ अंधेरा पेरने की हिम्मत कर पा रही हैं"।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation